ISSN 0974-8857

TULSĪ PRAJÑĀ

(An UGC-recognized Peer-reviewed Quarterly Research Journal of JVBI)

Year-45 • Vol. 179-180 • Issue: July-December, 2018

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE
A University dedicated to Oriental Studies & Human Values
Ladnun - 341 306, Rajasthan, India

Scanned by CamScanner

Tulsi Prajna
45 (179-180)
ISSN : 0974-8857

उत्तराध्ययनचूर्णि में ध्वनि–परिवर्तन की दिशाएं

समणी सम्यक्त्वप्रज्ञा*

सारांशिका

जैन आगम साहित्य में उत्तराध्ययन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। तत्त्व, आचार, दर्शन, उपदेश आदि का समन्वयात्मक रूप इसमें देखने को मिलता है। यह जीवन का समग्र दर्शन है। आगम–साहित्य की श्रृंखला में उत्तराध्ययन–सूत्र पर जितनी टीकाएं, उपटीकाएं एवं अनुवाद आदि कार्य किए गए हैं, उतने अन्य किसी आगम साहित्य पर उपलब्ध नहीं हैं। आगमों के व्याख्या–साहित्य की श्रृंखला में श्रीजिनदासगणिमहत्तर द्वारा विरचित उत्तराध्ययनचूर्णि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। विक्रम की 7वीं–8वीं शती में रचित यह चूर्णि प्राकृत–संस्कृत भाषा का मिश्रित रूप है।

भाषा व्यक्ति की सबसे बडी शक्ति है। भाषा–व्यवहार की क्षमता से युक्त होने के कारण ही मनुष्य अन्य प्राणियों की अपेक्षा अधिक विकसित है। अतः भाषा और व्यक्ति का परस्पर घनिष्ठ सम्बद्ध है। भाषाओं का वैज्ञानिक अध्ययन करना भाषा–विज्ञान का विषय है। भाषा–विज्ञान के मूलतः चार अंग है–ध्वनि–विज्ञान, पद–विज्ञान, वाक्य–विज्ञान, अर्थ–विज्ञान। ध्वनि भाषा से सम्बन्धित है। यह भाषा की प्रथम इकाई है। कोई भी भाषा अनुकरण के द्वारा सीखी जाती है। अतः इसमें ध्वनि सम्बन्धी अनेक परिवर्तनों का घटित होना स्वाभाविक है। प्रस्तुत आलेख में उत्तराध्ययनचूर्णि में वर्णित ध्वनि–परिवर्तन की कतिपय दिशाओं को निर्दिष्ट किया गया हैं, अतः यह आलेख भाषा–शास्त्रीय अध्येताओं के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हो सकता है।

मुख्य शब्दः भाषा–विज्ञान, समीकरण, विषमीकरण, आगम, लोप

* समणी सम्यक्त्वप्रज्ञा, सहायक आचार्य, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

Scanned by CamScanner